ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 142-145
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-8, No.-II, Issues-IX YEAR- Dec-2017

भारत-पाकिस्तान सम्बन्धों के बदलते परिदृश्य

डॉ0 संजय

एसोसिएट प्रोफेसर– रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, कुँवर सिंह पी0जी0कॉलेज, बलिया (उ0प्र0), भारत

भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों का इतिहास भावनात्मक लगाव एवं अप्रत्याषित घटनाओं का इतिहास है। सजातीय, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक अनुभूतियों की दृष्टि से सबसे निकट है किन्तु राजनीतिक अनुकुलन एवं विदेश नीति के परिप्रेक्ष्य में यह भारत से दूर है। पाकिस्तान जन्म से ही भारत विरोध की नीति अपनाते हुए 1947–48, 1965, 1971 एवं 1999 तक चार युद्ध कर चुका है। आज भारत एवं पाकिस्तान दोनों ही राष्ट्र परमाणु सम्पन्न राष्ट्र है तथा अपनें परमाणु जखीरे को बढ़ाते जा रहे है। पाकिस्तान में लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर सेना एवं कट्टरपंथियों का प्रभाव है जिसके कारण वह भारत विरोध की नीति को अपनाते हुए आतंकवादियों को भारत विरूद्ध कार्यवाही करने हेतु प्रश्रय दे रहा है तथा कश्मीर मुद्दे को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विवादित बनाये हुए है। आज पाकिस्तान चीन के साथ मिलकर चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपेक) का निर्माण पाक अधिकृत कश्मीर में कर रहा है। जिससे भारत एवं पाकिस्तान के सम्बन्ध बिगड़ रहे है।

भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों का इतिहास भावात्मक लगाव एवं अप्रत्याशित घटनाओं का इतिहास है। पाकिस्तान भारत का ऐसा पड़ोसी राष्ट्र है जो सबसे निकट होने के साथ ही सबसे दूर है। सजातीय, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक अनुभूतियों की दृष्टि से सबसे निकट है किन्तु राजनीतिक अनुकुलन एवं विदेश नीति के परिप्रेक्ष्य में यह भारत से दूर है पाकिस्तान एक ऐसा राष्ट्र है जिससे भारत के रक्त सम्बन्ध है। 1857 की क्रान्ति में भारत के हिन्दु एवं मुसलमान दोनों जातियों ने एकता का परिचय देते हुए ब्रिटिष साम्राज्य की गुलामी से मुक्ति प्राप्त करने हेतु मिलकर संघर्ष किया, अंग्रेजों ने बड़ी कठोरता से इस आजादी के प्रथम संग्राम को कुचल दिया किन्तु अंग्रेजों को यह आभास हो गया कि अगर भारत में अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करना है कि तो उन्हें ''फूट डालो और राज करों'' की नीति को अपनाना पड़ेगा, परिणाम स्वरूप उन्होंने भारत के हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डाल दिया। 28 दिसम्बर 1885 को इण्डियन नेशनल कांग्रेस तथा 30 दिसम्बर 1906 को आल इण्डिया मुस्लिम लीग की स्थापना हो गयी। इसमें दोनों पक्षों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और साम्प्रदायिकता के बढ़ावा दिया। इसने भारत एवं पाकिस्तान के रूप में दो राष्ट्रों के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार कर दिया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल तथा भारत के अन्तिम वायसराय लार्ड माउन्टवेटेन के प्रयासों से सभी देशी रियासतों का विलय भारत या पाकिस्तान में अपनी इच्छानुसार विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर अपना विलय सुनिश्चित करना था। 15 अगस्त 1947 को जूनागढ़, हैदराबाद तथा कष्मीर रियासत को छोड़कर सभी रियासतों ने अपना विलय दोनों राष्ट्रों में कर लिया जिसमें सरदार पटेल की दूरदर्शिता एंव कूटनीतिक चातुर्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही परन्तु इन तीनों रियासतों के विलय प्रश्न को लेकर विवाद उत्पन्न हो गये। स्वतंत्रता के पश्चात् यह उम्मीद की जा रही थी कि अब दोनों राष्ट्रों के बीच शान्ति स्थापित हो जायेगी और भारत तथा पाकिस्तान मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कार्य करेंगे परन्तु इसके विपरीत दोनों देशों के बीच विभिन्न विवाद उत्पन्न हो गये जिसमें जूनागढ़ भी समस्या के निराकरण हेतु भारत को जूनागढ़ में सैन्य हस्तक्षेप करना पड़ा। जूनागढ़ के नवाब महावत खाँ पूरे सरकारी खजाने के साथ पाकिस्तान भाग गया तथा दीवान शहनवाज भुट्टों ने 8 नवम्बर 1947 को जूनागढ़ का प्रशासन भारत सरकार को सौंप दिया 20 फरवरी 1948 को भारत में जनमत संग्रह कराया गया जिससे 180000 लोगों ने मतदान में भाग लिया तथा जिससे मात्र 90 या 91 मत पाकिस्तान में विलय के पक्ष में पड़े।1 जूनागढ़ समस्या समाधान के बाद दुसरी समस्या हैदराबाद की थी जिसका निजाम उस्मान अली खाँ ने अपनी रियासत को स्वतंत्र रखना चाहता था तथा उसने भारत सरकार के साथ किये एक वर्ष का यथास्थित समझौते (1947) का उल्लंघन करते हुए भारत के अन्य भूभागों में रजाकार संगठनों के द्वारा लूटपाट, हत्याएं आदि से जनता को आतंकित करने लगा परिणाम स्वरूप 13 सितम्बर 1948 को मेजर जनरल जे0एन0 चौधरी के नेतृत्व में सैन्यकार्यवाही कर 5 दिनों के अन्दर 18 सितम्बर 1948 को हैदराबाद के निजाम को आत्मसमर्पण करने के लिए विवश कर दिया तथा हैदराबाद का भी विलय भारत के साथ हो गया।

अगस्त 1947 में कष्मीर नरेश ने भी भारत एवं पाकिस्तान के साथ विलय प्रश्न पर हस्ताक्षर न करते हुए असमंजस की स्थिति बनाये रखा। वे नेपाल एवं भूटान की तरह अपनें राष्ट्र को स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में रखना चाहते थे। परन्तु यहाँ की स्थिति विचित्र थी। 'धरती का स्वर्ग' कहा जाने वाला कश्मीर रियासत प्राकृतिक सुन्दरता से सज्जित

अनुरूपी लेखक

बहुसंख्यक मुस्लिम जनसंख्या वाला राज्य था। इसे हम भौगोलिक दृष्टिकोण से तीन भागों में विभाजित कर सकते है।

(1) जम्मू का मैदानी क्षेत्र (जो हिन्दु बहुल)

(2) झेलम नदी की गोद में बसा कश्मीर घाटी (मुस्लिम बहुल)

(3) लद्दाख का ऊँचा पठार– (बौद्ध धर्म अनुयायी)

कश्मीर का क्षेत्रफल 222236 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र है कश्मीर राज्य की सीमाएं पूर्व में तिब्बत, उत्तर पूर्व में चीन तथा रूस, उत्तर पश्चिम में अफगानिस्तान, पश्चिम में पाकिस्तान दक्षिण पश्चिम में भारत के अन्य राज्यों की सीमाएं मिलती है। स्वाधीनता संग्राम के दौरान कश्मीर राजवंश के उत्पीड़न के विरूद्ध शेख अब्दुल्ला ने व्यापक जन–आन्दोलन का नेतृत्व किया जो निर्विवाद रूप से धर्म निरपेक्ष थे एवं पंडित जवाहर लाल नेहरू के मित्र थे। राजा हरि सिंह के असमंजस की स्थिति का लाभ पाकिस्तान ने उठाया एवं उत्तर पूर्व के कवायलियों को संगठित कर कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। कश्मीर में कवायलियों ने गिलगित, बारामुला, मुजफराबाद आदि जीत लिया। कश्मीर की बिगड़ती स्थिति को देखकर कश्मीर नरेश ने भारत से मदद मांगी तथा कश्मीर के विलय दस्तावेज पर 26 अक्टूबर 1947 को हस्ताक्षर कर दिया। 27 अक्टूबर 1947 को हवाई मार्ग द्वारा भारत की सेनाये श्रीनगर पहुँचकर प्रतिरोधात्मक कार्यवाही प्रारम्भ कर दी भारतीय सैनिको के वहाँ पहुँचने के पश्चात्–पाकिस्तान ने अपने सैनिकों को युद्ध में शामिल होने के लिए भेज दिया। भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 1 जनवरी 1948 को संयुक्तराष्ट्र संघ में पाक आक्रमण के विरूद्ध प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, किन्तु भारत तथा पाक के बीच कश्मीर में युद्ध चलता रहा। संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयासों के फल स्वरूप 1 जनवरी 1949 को भारत तथा पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम हो गया जिसे भारत एवं पाकिस्तान ने स्वीकार कर लिया। दोनों देशों के बीच 740 कि0मी0 लम्बी नियन्त्रण रेखा स्थापित कर दी गयी। जम्मू कश्मीर का 36.4 प्रतिशत भू–भाग जबरन पाकिस्तान के कब्जे में आ गया। (अपने ताकत के बल पर तथा कथित 'आजाद कश्मीर' (78218 वर्ग कि0मी0 वाले क्षेत्र) को अपने अधिकार में कर लिया तथा 2 मार्च 1963 को चीन के साथ गैर कानूनी समझौता कर कश्मीर का 5.180 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र उपहार में दे दिया) कश्मीर समस्या दोनों देशों के बीच एक ऐसे ज्वालामुखी की तरह है जो समय–समय पर लावा उगलती रहती है। अलाप माईकल के शब्दों में "कश्मीर समस्या अनिवार्यतः भूमि या पानी की समस्या नहीं, यह लोगों और प्रतिष्ठा की समस्या है।

भारत एवं पाकिस्तान की सरकारों ने यह स्वीकार किया था कि स्वतंत्र होने पर पाकिस्तान द्वारा भारत को 300 करोड़ रूपया 5 वर्षों में दिया जायेगा तथा भारत के 75 करोड़ रूपया पाकिस्तान को देना होगा। पाकिस्तान ने कर्ज अदायगी नहीं की, जबकि महात्मा गाँधी के वचन की रक्षा के कारण भारत को 55 करोड़ रूपये पाकिस्तान को देने पड़े और पाकिस्तान ने कश्मीर में लड़ाई प्रारम्भ कर दी।

1962 के भारत–चीन युद्ध में भारत की पराजय हुई और भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने चीन की इस धोखेबाजी पूर्ण आक्रमण एवं पंचशील के समझौते (1954) का उल्लंघन से आहत हुए और पंडित नेहरू की 1964 में मृत्यु हो गयी। अमेरिका से प्राप्त हथियारों एवं चीन से भारत के पराजय द्वारा अति उत्साह में पाकिस्तान ने 1965 में भारत पर पुनः आक्रमण कर दिया। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने "जय जवान, जय किसान" का नारा देकर अपने देश के नागरिकों एंव सैनिकों का मनोबल बढ़ाया। जिसके परिणाम रूवरूप भारत ने पाकिस्तान को पराजित कर देश का मान बढ़ाया। पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयुब खाँ को भारत के साथ ताशकन्द समझौता (1966) करना पड़ा। पाकिस्तान में उथल पुथल के पश्चात् राष्ट्रपति अयूब खाँ को अपने पद से त्याग पत्र देना पड़ा तथा राष्ट्रपति याहिया खाँ ने गद्दी सम्हाली तथा पूर्वी पाकिस्तान में लोकतांत्रिक प्रक्रिया बहाल करने हेतु चुनाव कराने का वचन दिया। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के जुल्फिकार अली भुट्टो तथा आवामी लीग के नेता शेख मुजीबर्रहमान के बीच चुनाव हुआ। पूर्वी पाकिस्तान की स्वायत्तता हेतु प्रयासरत शेख मुजीव को राष्ट्रपति याहिया खाँ ने जेल में बन्द करा दिया और व्यापक पैमाने पर पूर्वी पाकिस्तान का षोशण लूटपाट, हत्याए आदि प्रारम्भ कर दी गयी। जिसके परिणाम स्वरूप पूर्वी पाक के नागरिक अपनी जान बचाने के लिए भागकर भारतीय सीमाओं में आने लगे यह संख्या लगभग एक करोड़ तक पहुँच गयी, भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने पाक के इस कृत्य से विश्वजनमत को अवगत कराया तथा पाकिस्तान को इस कृत्य से बचने की चेतावनी दी इससे क्रोधित पाकिस्तान ने भारत के पश्चिमी मोर्चे पर 3 दिसम्बर 1971 को आक्रमण कर दिया तथा भारत ने प्रत्युत्तर में पूर्वी पाकिस्तान का नाम विश्व के मानचित्र से समाप्त कर 16 दिसम्बर 1971 को पाकिस्तान को करारी पराजय के साथ आत्मसम्पर्ण करने पर मजबूर कर दिया। इस युद्ध में 93000 पाक सैनिकों ने भारत के समक्ष आत्मसमर्पण किया। 28 जून 1972 को शिमला में भारत के प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी तथा पाकिस्तान के प्रधान मंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो के मध्य वार्ता होना तय हुआ और 3 जुलाई 1972

को शिमला समझौता सम्पन्न हुआ। शिमला समझौता के पश्चात भारत एवं पाकिस्तान के सम्बन्ध बहुत ही निम्न स्तर पर आ गये। पाकिस्तान की भारत नीति में पाकिस्तानी नागरिकों तथा विभिन्न इस्लामी देशों में भारत–विरोध की भावना के विकास का समावेष किया गया। 1977 में जनरल जिया–उल–हक के राष्ट्रपति बनने के पश्चात् पाकिस्तान की भारत नीति में कूटनीति उत्तेजना का विकास हुआ। जिया–उल–हक ने यथार्थ में द्विविधि नीति का अनुपालन करना प्रारम्भ किया एक ओर भारत के साथ शान्ति स्थापित करने की नीति का अनुपालन तथा दुसरी तरफ भारत के पंजाब प्रान्त में उग्रवादी गति विधियों को खुला समर्थन प्रदान करने की नीति। जिया–उल–हक के लिए कष्मीर एक महत्वपूर्ण मुद्दा था उसने स्पष्ट किया कि कश्मीर समस्या के हल के उपरान्त ही भारत पाक सम्बन्धों में सुधार लाया जा सकता है। 1979 में अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप ने पाकिस्तान के लिए अमेरिकी सहायता के मार्ग स्वतः प्रशस्त कर दिया इस काल में पाकिस्तान ने भारत के समक्ष युद्ध–निरोध का प्रस्ताव रखा था लेकिन दुसरी ओर उसने अपने बहुचर्चित के–2 (खालिस्तान–कश्मीर) परियोजना को मूर्त रूप देने हेतु भारत–विरोधी अभियान को त्वरित गति भी प्रदान की।

भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य को देखते हुए 18 मई 1974 को राजस्थान के पोखरण में परमाणु बम का परीक्षण विस्फोट किया तथा यह घोषणा किया कि हम परमाणु शक्ति सम्पन्न देश है तथा हमारे परमाणु शक्ति शान्तिपूर्ण कार्यो के लिए ही प्रयोग किया जायेगा। इससे भयभीत पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने ही अपने जीवन काल में ही पाकिस्तान का एटमबम की तलाश को इस्लामी भाई चारे से जोड़ दिया और इसे 'इस्लामी बम' की संज्ञा दिया। अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप के कारण अमेरिका ने पाकिस्तान के परमाणु बम पर दोहरा मानदण्ड अपनाया और पाकिस्तान का पश्चिम एशियान्मुख होना इस कारण सहज हुआ। पाकिस्तान ने डा0 अब्दुल कादिर खान के नेतृत्व में परमाणु बम की खोज प्रारम्भ कर दिया। भुट्टो का मानना था कि पाकिस्तान के पास परमाणु क्षमता होनी चाहिए गैर पारम्परिक हथियारों में पाकिस्तान की श्रेश्ठता होनी चाहिए जिससे की भारत पारम्परिक युद्ध में पाकिस्तान को हरा न सके।

सियाचिन विवाद राजनीति तथा रणनीतिक चयन को प्रभावित करने वाली भू–राजनीति का उदाहरण है। सियाचिनग्लेशियर लम्बे समय तक सुदूर अलग–थलग और गैर–महत्वपूर्ण रहा, किन्तु भारत, पाकिस्तान तथा चीन की भू–राजनीतिक वाध्यताओं ने इसे महत्वपूर्ण बना दिया है। यहाँ तीनों देश अपना सैन्य नियन्त्रण स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। भारत और पाकिस्तान की पर्वतारोही आवश्यकताओ से अधिक सैन्य वाध्यताओ ने सियाचिन क्षेत्र के सैन्यीकरण को प्रेरित किया। यह विश्व का सबसे ऊचा दुसरा सबसे बड़ा ग्लेशियर है। अप्रैल 1984 में 'आपरेशन मेघदूत' के तहत चौथी कुमाऊ रेजीमेन्ट के 120 जवानों ने इस पर कब्जा कर लिया। सियाचिन का ब्रिगेड हेडक्वार्टर 'परतापुर' में है। इस विवाद के समाधान के लिए भारत तथा पाकिस्तान के बीच अनेक वार्ताए हो चुकी है परन्तु अबतक कोई सार्थक समाधान नहीं निकला है।

भारत और पाकिस्तान ने 1998 में परमाणु परीक्षण किया तथा विष्व के खतरनाक क्षेत्र में चयनित हो गये। अमेरिका तथा अन्य राष्ट्रों ने भारत तथा पाकिस्तान पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाया। भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई तथा पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने आपसी सम्बन्धों को सुधारनें एंव विश्व जनमत के रूख को भापते हुए एक प्रयास प्रारम्भ किया, भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई ने दोनों देशों के बीच पुनः मैत्री वार्ता हेतु फरवरी 1999 में 'बस कूटनीति' द्वारा लाहौर की यात्रा की तथा भारत एवं पाकिस्तान के बीच 'लाहौर घोषणा 1999' पर दोनों देशों ने हस्ताक्षर किया। इसमें आपसी मुद्दों को शान्तिपूर्ण ढ़ंग से सुलझाने की दोनों राष्ट्रों ने प्रतिबद्धता व्यक्त किया। परन्तु शीघ्र ही पाकिस्तान के द्वारा उठाये गये कृत्य के द्वारा दोनों राष्ट्रों के सम्बन्ध बिगड़ गये। पाक सेना के सहयोग से पाकिस्तान की आई0एस0आई ने कई देशों के आतंकी संगठनों को भारत के कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करा दिया तथा आतंकवादियों ने भारत के क्षेत्रों में घुसकर कारगिल के लगभग 165 कि0मी0 क्षेत्रों में स्थापित सैन्य बंकरों में मोर्चा सम्हाल लिया। परिणाम स्वरूप भारत ने 'आपरेशन विजय' के द्वारा 26 मई 1999 से कारगिल क्षेत्र में सैन्य संक्रिया प्रारम्भ कर दिया, भारत ने इस संक्रिया हेतु थल सेना एवं वायु सेना के सहयोग से इस संक्रिया को सफल बनाया। अन्तर्राष्ट्रीय जनमत भी पाकिस्तान के विरूद्ध हो गया अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने पाकिस्तान को वापस जाने एवं चीन के सहयोग न करने पर पाकिस्तान ने अपने सैनिकों एवं घुसपैठियों को वापस लौटने का आदेश दे दिया। 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल विजय की घोषणा कर दिया। कारगिल युद्ध दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाला भारत का पहला सूचना युद्ध था। कारगिल रण क्षेत्र के रूप में और एक प्रतीक के रूप में देश के घर–घर में चर्चा का विषय बन गया। सैन्य इतिहासकार कार्लवान क्लाजविट्ज के अनुसार "सरकार, सेना और जनता तीनों के बीच तालमेल से युद्ध बड़ा जाता है। जीत सुनिश्चित करने के लिए आपसी तालमेल की आवश्यकता पड़ती है। सरकार राजनीतिक उद्देश्य

तय करती है सेना उस राजनीतिक लक्ष्य की पूर्ति का साधन है तथा जनता इच्छा शक्ति प्रदान करती है।

भारत सरकार ने पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों को विकसित करने हेतु अपनी पड़ोस नीति की प्राथमिकता को ध्यान दिया, जिससे उसने पाकिस्तान के साथ, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, खेल संस्कृति से सम्बन्धों को पूरा सुधारने का प्रयास किया। भारत ने पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध सुधारने हेतु प्रयास किये किन्तु पाकिस्तान भारत को "हजार घाव देने की नीति" पर अग्रसर है वह अपने विवादों को सुलझाने के बजाय उलझाता जा रहा है। आज भारत एवं पाकिस्तान दोनों परमाणु सम्पन्न राष्ट्र है तथा दोनों अपने परमाणु जखीरे को बढ़ा रहे है। पाकिस्तान भारत का प्रत्यक्ष युद्ध न कर अप्रत्यक्ष रूप से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आतंकी गतिविधियों को संचालित कर रहा है। भारत और पाकिस्तान के बीच चार छोटे बड़े युद्ध (1947–48, 1965, 1971, 1999) हो चुके है इनको सुलझाने हेतु ताषकन्द समझौता (1966), शिमला समझौता (1972), गुजरात डाक्ट्रिन (1997) लाहौर समझौता (1999) आदि महत्वपूर्ण समझौते किये गये किन्तु बदले में पाकिस्तान ने संसद भवन आतंकी घटना (2001) मुम्बई ट्रेन विस्फोट (2006), मुम्बई आतंकी हमला (2008), पठानकोट वायुसेना स्टेशन पर आक्रमण (2016) आदि पर हमलाकर भारत द्वारा किये जा रहे षान्ति प्रयासों को असफल कर दिया। पाकिस्तान में चीन द्वारा बनाई जा रही चीन पाक आर्थिक कारिडोर (सीपेक) जो पाक अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरती है यह भारत पाकिस्तान के रिश्तों को बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

भारत में 2014 को नरेन्द्र मोदी सरकार ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में पड़ोसी प्रथम की नीति को अपनाते हुए सार्क देशों के प्रमुखों को आमंत्रित कर एक नये सम्बन्धों को गढ़ने की प्रक्रिया प्रारम्भ किया, जिसमें प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भी सम्मिलित हुए थे तथा पुनः भारत–पाकिस्तान के सम्बन्धों को शुरू करने हेतु एक कदम बढ़ाया। 2015 में अफगानिस्तान से लौटते समय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नवाज शरीफ के घर पहुँचकर अनौपचारिक वार्ता किया किन्तु पाकिस्तान ने भारत के सम्बन्धों का ध्यान न देते हुए पठानकोट के वायुसेना स्टेशन पर आंतकी हमला ने भारत को अपने नीति को बदलते हुए पाकिस्तान में सर्जिकल स्ट्राइक (2016) को अंजाम देना पड़ा। भारत ने अब यह स्पष्ट कर दिया है कि किसी भी आतंकी कार्यवाही का मुँहतोड़ जवाब दिया जायेगा। यह सूच्य है कि पाकिस्तान का जन्म से अब तक अधिकांश समय सैनिक शासन में व्यतीत हुआ और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को फलने फूलने का समय कम ही मिला है, और जो भी समय मिला उसे अमेरिका, आई0एस0आई0, एवं कट्टरवादियों के ही इषारे पर कार्य करना पड़ा। अतः अब भारत को अपने सम्बन्धों को सोच समझकर आगे बढ़ाना है क्योंकि पाकिस्तान भारत की मित्रता का आदर नहीं करता उसका सिद्धान्त भारत का विरोध की नीति को आगे बढ़ाना है। आज भारत ने सैन्य और आर्थिक शक्ति, तकनीकी क्षमताओं को हासिल किया है और मानव सुरक्षा को सुनिश्चित करने में अपने कौशल में वृद्धि कर ली है। इसके बावजूद उसे पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों को ठीक करना है, और अपने पड़ोसियों के साथ के विवादों को सुलझाना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, डा0 लल्लन जी सिंह, राष्ट्रीय रक्षा एंव सुरक्षा, संस्करण–2017, पृष्ठ–394
2. सिंह, डा0 लल्लन जी सिंह, राष्ट्रीय रक्षा एंव सुरक्षा, संस्करण–2017, पृष्ठ–395
3. राय, डा0 सुरेन्द्र नाथ राय, डा0 (श्रीमती) हेमन्त– भारत का सैन्य इतिहास, द्वितीय संस्करण– 2008, पृष्ठ–418
4. फडिया, डॉ0 वी0एल0 : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, संस्करण 2011, पृष्ठ–265
5. श्रीवास्तव, सी0वी0पी0 – भारत और विश्व : बदलते परिदृश्य संस्करण–2002, पृष्ठ–237
6. पन्त, डा0 पुष्पेश, जैन, श्रीपाल, पंचौला, डा0 राखी : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध : सिद्धान्त एवं व्यवहार बारहवाँ संस्करण–2016, पृष्ठ–422
7. दीक्षित, जे0एन0 : भारत–पाक सम्बन्ध (युद्ध और शान्ति में) प्रथम संस्करण–2012, पृष्ठ–374
8. राघवन, लेटि0 जनरल वी0आर0 : सियाचिन अन्तहीन संघर्ष, संस्करण–2009, पृष्ठ–40
9. मलिक, जनरल वी0पी0 : कारगिल (एक अभूतपूर्व विजय), संस्करण–2012 पृष्ठ–297

*****